classmate
Date 30/04/20
Page 1

Dr. Md. Arshad Ali
Deptt of Philosophy
Jagjiwan college
V.K.S.U, Ara.

Sub:- Philosophy
class- B.A, Part-2 (Hons)
Paper - IV

Topic ⇒ देकार्त: मन और शरीर सम्बन्ध
(Descartes: Mind and body Relation)

मन और शरीर के आपसी सम्बन्धों की समस्या दर्शन के इतिहास में अत्यन्त ही पुरानी एवं विवादास्पद है। देकार्त ने इस समस्या का समाधान क्रिया-प्रतिक्रियावाद (Theory of interactionism) के आधार पर करने का प्रयास किया है। उनके मतानुसार मन और शरीर के बीच क्रिया-प्रतिक्रिया होती है। हमारे अन्दर पिनियल ग्लेन्ड (Penial gland) नामक एक विशेष प्रकार की ग्रन्थि है जिसके सहारे मन तथा शरीर एक दूसरे पर क्रिया-प्रतिक्रिया करते हैं। यही कारण है कि हमें अपने व्यावहारिक जीवन में यह अनुभव होता है कि मन शरीर पर तथा शरीर मन पर प्रभाव डालता है।

देकार्त ईश्वर के अलावा चित और अचित दो अन्य द्रव्य की सत्ता में विश्वास करते हैं। जहाँ ईश्वर निरपेक्ष द्रव्य है वहीं

चीत और अचीत सापेक्ष सत्य है। मन का गुण विचार तथा शरीर का गुण विस्तार है। मन में विस्तार नहीं हो सकता तथा शरीर में विचार नहीं हो सकता है। इस प्रकार से मन तथा शरीर दोनों विरोधी तत्व है।

मन तथा शरीर में द्वैत स्पष्ट है। चेतना तथा जड़ दोनों विरोधी तत्व है, अतः इसमें किसी प्रकार का संबंध संभव नहीं है। आत्मा की क्रिया से शरीर में प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है, जिसके परिणामस्वरूप शरीर में विचार के अनुकूल व्यवहार होने लगता है। यह प्रक्रिया निम्न चरणों में संपन्न होती है।

(i) बाह्य जगत में संवेदनाएँ उत्पन्न होती है। इन संवेदनाओं को इन्द्रियाँ ग्रहण करती है। बाह्य वस्तु से उत्पन्न संवेदनाएँ उद्दीपन का कार्य करती है, जिसका प्रभाव इन्द्रियों पर पड़ता है।

(ii) इन प्रभावों के परिणामस्वरूप जैविक शक्ति उत्पन्न होती है।

(iii) जैविक शक्ति के उत्पन्न होने पर इसके माध्यम से प्रभाव पीनियल ग्रन्थि तक पहुँच जाती है।

(iv) पीनियल ~~ग्रन्थि~~ ग्रन्थि से जैविक शक्ति नाड़ी तंत्र में वियोजन करते हुए

मॉसपेशियों तक पहुंचती है। इसके बाद शारीरिक व्यापार शुरु होता है।

देकार्त मन शरीर संबंध को एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट करते हैं - "घोड़ा तथा घुड़सवार दोनों भिन्न है परन्तु उसमें पारस्परिक क्रिया होती है। जिस प्रकार घुड़सवार एड़ लगाकर घोड़ा की गति में वेग उत्पन्न करता है। उसी प्रकार मन भी शारीरिक क्रियाओं को उत्तेजित करता है।" यह उदाहरण केवल उपमा है व्याख्या नहीं। दोनों की प्रकृति भी गतिमूलक है। घोड़ा तथा घुड़सवार दोनों में उद्देश्य की समानता है। ~~परन्तु घुड़सवार दोनों में उद्देश्य~~ परन्तु मन तथा शरीर दोनों में उद्देश्यगत समानता नहीं है। जड़ और चेतन विस्तार और विचार में किसी प्रकार की समानता दृष्टिगत नहीं है। परन्तु दोनों में अन्तःक्रिया का अनुभव हमें प्रतिदिन होता है। देकार्त इसकी सम्यक व्याख्या नहीं कर पाते हैं।

देकार्त के मन और शरीर संबंध के उपरोक्त विवेचन के आलोक में हम निष्कर्षतः यह कह सकते हैं कि देकार्त मन शरीर संबंध की सम्यक व्याख्या नहीं कर पाते हैं वे मन और शरीर को दो स्वतंत्र सत्ता मानते

है, वही दूसरी ओर वह दोनों में संबंध भी स्थापित करना चाहते हैं। यहाँ विरोधाभास दृष्टिगत है। इसके बावजूद देकार्त का मन और शरीर संबंध आगे के दार्शनिकों के लिए एक नवीन दृष्टिकोण दिया। आधुनिक दार्शनिक राइल ने देकार्त के मन और शरीर के भेद में कोई-दोष का प्रतिपादन किया है। वह इसे मशीन में प्रेत का पूर्वाग्रह मानते हैं। इससे स्पष्ट है कि देकार्त के द्वैतवाद के आधार पर ही राइल के दर्शन का विकास हुआ है। इस प्रकार से देकार्त का यह सिद्धान्त आगे के दार्शनिकों के लिए एक लेटफार्म का कार्य किया है। देकार्त ने सर्वप्रथम दर्शन को परम्परा के कारागार से मुक्त कर स्वतंत्र विचारों के लिए स्वतंत्र वातावरण का निर्माण किया है। ~~वस्तुतः~~

वस्तुतः मन और शरीर को एक दूसरे से पृथक मानना बनावटी ~~बात~~ लगता है क्योंकि हम कभी भी अपने को केवल मन या केवल शरीर के रूप में अनुभव नहीं करते। वास्तविक सत्ता मन-देह (mind-body) है न कि मन और देह (mind and body)। पर देकार्त ने इसे मन और देह या शरीर के रूप में मान कर एक समस्या खड़ी कर दी है जिसका सही तर्कपूर्ण और सर्वमान्य समाधान वे स्वयं नहीं दे पाये।